International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 14-12-2025, Accepted: 13-01-2026, Published: 28-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 50-52

मध्यकालीन भारतीय समाज में नारी: स्थिति, संघर्ष और योगदान

डॉ. कल्पना थपलियाल
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग, श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन भारतीय इतिहास में महिलाओं की भूमिका का समग्र विश्लेषण करता है, विशेषतः मध्यकालीन संदर्भ में। प्राचीन वैदिक युग में जहाँ नारी को शिक्षा, धर्म, साहित्य और सामाजिक निर्णयों में सक्रिय सहभागिता प्राप्त थी, वहीं मध्यकाल में राजनीतिक अस्थिरता, आक्रमणों, केंद्रीकृत सत्ता के अभाव और पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना के सुदृढ़ होने से महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय गिरावट आई। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती, बहुविवाह तथा शिक्षा से वंचना जैसी सामाजिक कुरीतियों ने नारी के सार्वजनिक, बौद्धिक और राजनीतिक जीवन को सीमित कर दिया। इसके बावजूद यह काल पूर्णतः नारी निष्क्रियता का नहीं था। जहाँआरा, जेबुन्निसा, नूरजहाँ, रजिया सुल्तान, मीराबाई, अक्का महादेवी, रानी दुर्गावती, चांद बीबी, अब्बक्का चौटा और रानी पद्मिनी जैसी स्त्रियों ने प्रशासन, भक्ति आंदोलन, साहित्य और युद्ध के क्षेत्र में अपनी असाधारण प्रतिभा, साहस और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मध्यकालीन प्रतिबंधों के बावजूद भारतीय महिलाओं ने सामाजिक संरचनाओं को चुनौती दी और अपने योगदान से इतिहास को समृद्ध किया। अतः भारतीय इतिहास में नारी की भूमिका संघर्ष, सृजन और सशक्तिकरण की निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखी जा सकती है।

मूल शब्दः भारतीय इतिहास, नारी की भूमिका, मध्यकालीन समाज, पितृसत्ता, सामाजिक प्रतिबंध, भक्ति आंदोलन, महिला शिक्षा, नारी सशक्तिकरण, प्रशासन में महिलाएँ, युद्ध एवं वीरता, साहित्य में स्त्री योगदान, ऐतिहासिक नायिकाएँ

भारतीय इतिहास में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, महिलाओं ने समाज के हर क्षेत्र में योगदान दिया है। वैदिक काल में नारी को न केवल धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने का अधिकार प्राप्त था, बल्कि वे ज्ञान, कला, विज्ञान और साहित्य में अग्रणी थीं। उस समय महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने, अपने विचार व्यक्त करने और सामाजिक निर्णयों में हिस्सा लेने का अधिकार भी प्राप्त था। धार्मिक ग्रंथ, पुरातात्विक साक्ष्य और पारंपरिक कथाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि नारी का योगदान सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक उन्नति में अतुलनीय रहा है। लेकिन जैसे–जैसे समय बदला, विशेषकर मध्यकालीन युग में, समाज के ढांचे में आए व्यापक परिवर्तन ने महिलाओं की स्थिति पर गहरा प्रभाव डाला। मध्यकालीन भारतीय समाज में अनेक राजनैतिक कारणो से महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई। जिनमें बार–बार होने वाले आक्रमणों और राजनीतिक उथल–पुथल ने महिलाओं की सुरक्षा को खतरे में डाल दिया। साथ ही नए शासकों ने अक्सर ऐसे कानून और सामाजिक मानदंड लागू किए जो महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता को कम करते थे। कुछ मामलों में, इन कानूनों ने महिलाओं को संपत्ति के अधिकार, विरासत और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी से वंचित कर दिया। केंद्रीकृत शक्ति की अनुपस्थिति ने क्षेत्रीय शासकों को अपने स्वयं के कानून और रीति–रिवाज स्थापित करने की अनुमति दी, जो कुछ महिलाओं के लिए हानिकारक थे। इस विखंडन ने महिलाओं के अधिकारों के लिए एक समान और सुरक्षात्मक ढांचा बनाने के प्रयासों को भी बाधित किया। केंद्रीकृत सत्ता का अभाव और क्षेत्रीय राज्यों का उदय के कारण राजनीतिक सत्ता में महिलाओं की भूमिका सीमित हो गई। इस बहिष्करण ने महिलाओं के हितों का प्रतिनिधित्व करने और नीतियों को प्रभावित करने की उनकी क्षमता को सीमित कर दिया। इन सब कारणो से पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, बहुविवाह और दास प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों ने महिलाओं को सीमित कर दिया। हिंदू परिवारों में महिलाओं को गृहस्वामिनी माना जाता था, लेकिन वे अक्सर पुरुषों के नियंत्रण में रहती थीं। मुस्लिम समाज में भी महिलाओं को समानता नहीं दी जाती थी और वे पूरी तरह अपने पति पर निर्भर थीं। सामाजिक वर्गीकरण और जाति व्यवस्था ने भी महिलाओं की स्थिति पर गहरा प्रभाव डाला। उच्च वर्ग की महिलाओं को सीमित रूप में शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलता था, परंतु निचले वर्ग की महिलाओं को पारंपरिक सामाजिक नियमों द्वारा पूरी तरह से नियंत्रित कर दिया जाता था। इससे उनकी स्वतंत्रता और सामाजिक पहचान काफी हद तक सीमित हो गई। वही अनेक धार्मिक ग्रंथों और सामाजिक अभिलेखों में महिलाओं की भूमिका को एक सहायक और विनम्र गृहिणी के रूप में चित्रित किया गया है। धार्मिक अनुष्ठानों में भी महिलाओं को विशेष परिस्थितियों में ही भाग लेने की अनुमति दी जाती थी, जिससे उनके सार्वजनिक और सांस्कृतिक जीवन में भागीदारी कम हो गई। इस प्रकार के प्रतिबंधों ने नारी के सर्वांगीण विकास और नेतृत्व क्षमता को कमजोर कर दिया।

इस दौर में पितृसत्तात्मक व्यवस्था और भी प्रबल हो गई। सामाजिक रीति–रिवाज, परंपरागत मान्यताएँ और धार्मिक विचारों ने महिलाओं के अधिकारों पर कठोर पाबंदियाँ लगा दीं। इसके परिणामस्वरूप, महिलाओं को शिक्षा, स्वतंत्रता और राजनीतिक क्षेत्रों से काफी हद तक वंचित कर दिया गया। इस संक्रमणकालीन अवधि में परिवार और समाज ने महिलाओं की पहचान मुख्यतः पति, पुत्र या गृहिणी के रूप में निर्धारित कर दी, जिससे उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक पहचान सीमित हो गई। विवाह, परिवार और संबंधों की जटिलताओं ने उन्हें एक निष्क्रिय भूमिका में बदल दिया। धार्मिक संस्थाओं और राजनैतिक ढाँचों ने भी महिलाओं के अधिकारों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। इस समय में, महिलाओं की रचनात्मकता, स्वावलंबन और नेतृत्व क्षमता पर कई बाधाएँ आ गईं, जिससे उनके सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक विकास में ठहराव आया। अधिकांश महिलाओं को शिक्षा का अवसर केवल घर पर पारिवारिक वातावरण में ही मिलता था। कई मामलों में उन्हें औपचारिक विद्यालयों या गुरुकुलों में दाखिला नहीं मिल पाता था। पारंपरिक तरीके से, घर पर ही माता–पिता या परिजनों द्वारा

मौखिक परंपरा, लोककथाएँ, और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कराया जाता था। इस प्रकार, औपचारिक शिक्षा की तुलना में सीमित ज्ञान ही महिलाओं तक पहुँच पाता था। उच्चवर्ग और शाही परिवारों में, जहाँ सामाजिक प्रतिष्ठा और सामरिक कारणों से महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान दिया जाता था, वहाँ उन्हें साहित्य, संगीत, नृत्य तथा धार्मिक शिक्षाओं का ज्ञान दिया जाता था। इस कारण से मध्यकाल में शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण गिरावट देखने को मिली। इस समय केवल उच्च वर्ग की महिलाओं को ही सीमित रूप में शिक्षा प्राप्त होती रही, जबकि सामान्य और ग्रामीण वर्ग की महिलाएं पारंपरिक सामाजिक नियमों के कारण शिक्षा से वंचित रहीं। फिर भी, कुछ शाही और अमीर परिवारों की महिलाओं ने साहित्य, कला और प्रशासन में अपना योगदान दिया।

इन सभी जटिल परिस्थितियो के पश्चात् भी मध्यकाल में कई स्त्रीयो ने इतिहास रचा और इस युग में महिलाओं की उपस्थित दर्ज की। जिनमें मुगल काल की जहाँआरा, जो शाहजहाँ की बेटी थी ने मुगल प्रशासन में सक्रिय भूमिका निभाई। जहाँआरा ने एक कुशल विद्वान और व्यापारिक योजनाकार के रूप में, आगरा और दिल्ली में अनेक निर्माण कार्य कराए तथा महिलाओं की शिक्षा में योगदान दिया। तो वही इसी दौर में जेबुन्निसा बेगम ने ज्ञान एवं साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देकर सामाजिक चेतना को जागरूक किया। इनके साथ ही दक्षिण भारत की संत कवयित्री अक्क महादेवी ने भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन का "न मैं नारी हूँ, न पुरुष हूँ, मैं केवल शिव की हूँ।"[1] कथन स्त्री की लैंगिक सीमाओं से परे आध्यात्मिक पहचान को रेखांकित करता है।उन्होंने स्त्री स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का संदेश दिया और अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से आध्यात्मिक जागरूकता फैलाई। वही मीराबाई ने भक्ति आंदोलन में कृष्णकाव्य परम्परा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मीराबाई ने भक्ति आंदोलन के माध्यम से नारी सशक्तिकरण का संदेश दिया। मीरा ने''मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।"[2] कह कर नारी की आत्मिक स्वतंत्रता, साहस और सामाजिक विरोध को दर्शाता है। मध्यकाल में महिलाओं की भागीदारी की भले ही सीमित रही हो पर महत्वपूर्ण रही। जिनमें रजिया सुल्तान पहली महिला शासक थीं, जिन्होंने दिल्ली की गद्दी संभाली और अपनी प्रशासनिक कुशलता सिद्ध हुई। रज़िया के समय के सबसे प्रमुख इतिहासकार थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'तबकात–ए–नासिरी' में रज़िया के बारे में जो कहा है "रज़िया एक महान शासिका थी—बुद्धिमान, न्यायप्रिय, उदार, विद्वानों की संरक्षक, अपनी प्रजा की हितैषी और युद्ध के मैदान में एक निडर योद्धा। उसमें एक सुल्तान होने के सभी गुण थे, सिवाय इसके कि वह एक महिला पैदा हुई थी।"[3] रज़िया सुल्तान मध्यकालीन भारत की पहली महिला शासिका थीं, जिन्होंने पितृसत्तात्मक समाज और रूढ़ियों को चुनौती दी। रज़िया सुल्तान के साथ ही नूरजहाँ, जिनका असली नाम मेहरुन्निसा था, ने भी अपने राजनीतिक कौशल के लिए प्रसिद्ध थीं। नूरजहाँ ने भी कूटनीति और रणनीति से समस्या का समाधान किया। उनके गठबंधन और प्रशासनिक हस्तक्षेप ने यह दर्शाया कि महिलाओं में भी कुशल नेतृत्व क्षमता निहित होती है। नूरजहां के शासन का अध्ययन करने के पश्चात डॉ. सतीश चंद्र ने कहा है कि "नूरजहाँ का शासनकाल इस तथ्य का प्रमाण है कि स्त्री भी कुशल प्रशासक हो सकती है।"[4] गोंड रानी दुर्गावती और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने भी युद्ध में वीरता का परिचय दिया। आर. सी. मजूमदार ने अपनी पुस्तक जैम History and Culture of the Indian People में रानी दुर्गावती को साहसी, राष्ट्ररक्षक और आत्मसम्मान की प्रतीक के रूप में वर्णित किया है। मुगल इतिहासकार अबुल फज़ल ने अकबरनामा में रानी दुर्गावती की प्रशंसा करते हुए लिखा था: "वह (रानी दुर्गावती) अपने समय की सबसे सुंदर, बुद्धिमान और बहादुर महिला थीं। उन्होंने अपनी प्रजा के साथ न्याय किया और एक कुशल सेनापति की तरह युद्ध लड़ा।"[5] इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि कुछ महिलाओं ने अपने साहस और कुशलता से शासन व्यवस्था को प्रभावित किया। 16वीं शताब्दी में चांद बीबी ने अकबर की सेना के विरुद्ध अहमदनगर की रक्षा की थी। तो वही गोंड रानी दुर्गावती का जीवन वीरता और संघर्ष का प्रतीक था। मुगल सेना के आक्रमण के समय, उन्होंने निडर होकर युद्ध किया और अंतिम क्षण तक संघर्ष करते हुए आत्मबलिदान कर दिया ताकि उनके राज्य का सम्मान बना रहे। चित्तौड़ की रानी पद्मिनी अपनी सुंदरता और वीरता के लिए प्रसिद्ध थीं। जब अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर हमला किया, तो उन्होंने अपने सम्मान की रक्षा के लिए जौहर (आत्मबलिदान) किया, जो भारतीय इतिहास में स्वाभिमान का प्रतीक बन गया। दक्षिण भारत की योद्धा रानी अब्बक्का चौटा ने पुर्तगालियों के खिलाफ वीरतापूर्वक संघर्ष किया। उन्होंने अपने राज्य तुलुव पर यूरोपीय नियंत्रण को अस्वीकार किया और अनेक युद्धों का सफल नेतृत्व किया, जिससे उनकी वीरता और रणनीतिक कौशल इतिहास में अमर हो गया।

निष्कर्ष

निष्कर्षतह कहा जा सकता है, भारतीय इतिहास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, चाहे वह प्राचीन काल में विदुषी और सशक्त नारी के रूप में हो या मध्यकाल में सामाजिक प्रतिबंधों और राजनीतिक चुनौतियों के बीच अपने अस्तित्व और अधिकारों की रक्षा करने वाली नायिकाओं के रूप में। मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट अवश्य आई, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता, साहस और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। भक्ति आंदोलन, प्रशासन, युद्ध और साहित्य के माध्यम से अनेक महिलाओं ने सामाजिक संरचना को चुनौती दी और अपनी छाप छोड़ी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि चाहे कितनी भी प्रतिकूल परिस्थितियाँ क्यों न आई हों, महिलाओं ने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने शिक्षा, धर्म, राजनीति और युद्ध जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। रजिया सुल्तान, नूरजहाँ, रानी दुर्गावती, मीराबाई और अक्क महादेवी जैसी महान हस्तियों ने यह सिद्ध किया कि परिस्थितियां कैसी भी रही हो प्रत्येक युग में महिलओं ने समाज हित में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं। इन ऐतिहासिक उदाहरणों से हम यह अनुभव करते है कि समाज में समानता और न्याय सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं ने समय– समय पर सशक्त एंव अनिवार्य भूमिका अदा की है।इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन सामाजिक प्रतिबंधों के बावजूद भारतीय नारी ने अपने साहस, भक्ति और नेतृत्व से इतिहास को नई दिशा दी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. चं रामानुजन, ए. के. (1999). शिव पर संवाद (स्पीकिंग ऑफ़ शिव). नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया। (अक्का महादेवी एवं वचन साहित्य के संदर्भ में)
2. मीरा बाई. (16वीं शताब्दी). पदावली. राजस्थान: भक्ति परंपरा की पांडुलिपियाँ।
3. मिन्हाज–उस–सिराज जुज़जानी. (1998). तबक़ात – ए – नासिरी (अनु. एच. जी. रावर्टी). नई दिल्ली: लो लिटरेचर पब्लिकेशन।
4. द्रा, सतीश. (2005). मध्यकालीन भारत: सल्तनत से मुग़लों तक (भाग 1 एवं 2). नई
5. अबुल फ़ज़ल. (2007). अकबरनामा (अनु. हरिवंश राय बच्चन, संपा.). नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास। (मूल ग्रंथ: लगभग 1590 ई.) दिल्ली: हर–आनंद पब्लिकेशन्स।
6. शर्मा, रामस्वरूप. भारतीय नारी का इतिहास। नई दिल्ली: साहित्य भवन, 2005।

7. मिश्रा, सुरेश. मध्यकालीन भारत में महिलाएँ। वाराणसी: भारतीय प्रकाशन, 2010।
8. चौहान, कन्हैयालाल. मुगलकालीन महिलाओं की भूमिका,जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2015।
9. सिंह, प्रताप. भारतीय समाज में नारी की स्थिति। पटना: ज्ञानदीप प्रकाशन, 2018।
10. खान, अनवर. मध्ययुगीन भारत और मुस्लिम महिलाएँ, अलीगढ़: अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2020।
11. मध्कालीन हिन्दी कवयित्रियाँ, डॉ. सवित्री।
12. मध्कालीन हिन्दी कवयित्रियाँ, डॉ. सवित्री।
13. मध्कालीन हिन्दी कवयित्रियाँ, डॉ. सवित्री।
14. पंचशील शोध–समीक्षा।
15. स्त्री समाज ठाकुर ज्योर्तिमयी, प्रकाशक नागरी प्रचारणी सभा, 1946।
16. मध्यकालीन समाज एवं संस्कृति,वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग।